नाग पंचमी व्रत कथा PDF

प्राचीन कथा के अनुसार, एक बार एक साहूकार था उसके सात बेटे थे। उसके सभी सातों बेटों की शादी हो चुकी थी। सबसे छोटे बेटे की पत्नी बहुत अच्छे चरित्र वाली थी, लेकिन उसका कोई भाई नहीं था। एक दिन सेठजी की बड़ी बहू घर लीपने के लिए सभी बहुओं के साथ पीली मिट्टी लेने गई तो सभी धलिया और खुरपी लेकर मिट्टी खोदने लगीं। तभी वहां एक सांप निकल आया जिसे देखकर बड़ी बहू उसे खुरपी से मारने का प्रयास करने लगी। यह देखकर छोटी बहू ने सांप को मारने से रोका।

यह सुनकर बड़ी बहू ने उसे नहीं मारा और साँप एक ओर जाकर बैठ गया। तब छोटी बहू ने उस सर्प से कहा– हम अभी वापस आती हैं, तुम यहां से कहीं मत जाना। तुम कहीं जाना मत यही रहना इतना कहने के बाद वह सब के साथ मिट्टी लेने चली गई और काम में इतना व्यस्त हो गई कि सांप से जो उसने वादा किया था उसे भूल गई।

अगले दिन जब छोटी बहू को वह बात याद आई तो वह सबको साथ लेकर वहां पहुंची और सांप को उस स्थान पर बैठा देखकर बोली– नमस्ते सांप भाई! साँप ने कहा– 'तुमने भाई कहा है इसलिए मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ, नहीं तो झूठ बोलने के कारण मैं तुम्हें डस लेता। वह बोली– भैया, मुझसे गलती हो गई, मैं क्षमा चाहती हूं, सांप बोला– अच्छा, आज से तुम मेरी बहन हो और मैं तुम्हारा भाई हूं। जो चाहो मांग लो। वह बोली– भैया! मेरा कोई भाई नहीं है, अच्छा हुआ कि तुम मेरे भाई बन गये।

कुछ देर बाद सर्प मनुष्य का रूप धारण करके उसके घर आया और बोला, 'मेरी बहन को भेजो।' सभी को आश्चर्य हुआ क्योंकि सभी जानते थे कि 'इसके कोई भाई नहीं है, इसलिए सांप ने कहा– मैं इसका चचेरा भाई हूं।' , बचपन में ही बाहर चला गया था। यह सुनकर घर के लोगों ने छोटी बहू को उसके साथ

भेज दिया। उसने रास्ते में बताया कि मैं एक साँप हूँ, इसलिए डरना मत और जहाँ भी चलने में कठिनाई हो, मेरी पूँछ पकड़ लेना। छोटी बहू उसके कहे अनुसार उसके घर पहुंची। वहां की धन–संपदा और ऐश्वर्य देखकर वह आश्चर्यचकित रह गई।

एक दिन साँप की माँ ने उससे कहा– मैं किसी काम से बाहर जा रही हूँ, तुम अपने भाई को ठंडा दूध दे देना। लेकिन छोटी बहू ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया और गलती से सांप को गर्म दूध पिला दिया, जिससे उसका मुंह जल गया। यह देखकर साँप की माँ बहुत क्रोधित हुई। लेकिन सांप के समझाने के बाद वह शांत हो गई. तब सर्प ने कहा कि बहन को अब उसके घर भेज देना चाहिए। तब साँप और उसके पिता ने उसे बहुत सा सोना, चाँदी, जवाहरात, वस्त्र और आभूषण दिये और अपने घर ले गये।

इतना सारा धन देखकर बड़ी बहू ने ईर्ष्या से कहा– तुम्हारा भाई तो बहुत धनवान है, तुम्हें तो उससे भी ज्यादा धन लाना चाहिए। जब साँप ने यह सुना तो उसने सोने की सब वस्तुएँ लाकर उन्हें दे दीं। यह देखकर बड़ी बहू ने कहा– झाड़ू लगाने के लिए झाड़ू भी सोने की होनी चाहिए। फिर साँप ने झाड़ू को भी सोना लाने वाले के पास रख दिया।

साँप ने छोटी बहू को हीरे–जवाहरातों का एक अद्‌भुत हार दिया था। उसकी प्रशंसा उस देश की रानी ने भी सुनी और उसने राजा से कहा कि साहूकार की छोटी बहू का हार यहाँ आ जाना चाहिए। राजा ने मंत्री को आदेश दिया कि वह उससे हार लेकर शीघ्र आये। मंत्री साहूकार के पास गया और बोला कि रानी हार छोटी बहू को पहना देगी, उससे ले लेना और मुझे दे देना। साहूकार ने डर के मारे हार छोटी बहू को दे दिया।

यह बात छोटी बहू को बहुत बुरी लगी, उसने अपने साँप भाई को याद किया और आने पर प्रार्थना की– भाई! रानी ने हार छीन लिया है, तुम कुछ ऐसा करो कि जब तक हार उसके गले में रहेगा तब तक वह साँप बन जाएगा और जब

वह मुझे लौटा देगी तो हीरे–जवाहरात का हो जाएगा। साँप ने ठीक वैसा ही किया। जैसे ही रानी ने हार पहना तो वह सर्प बन गया। यह देखकर रानी की चीख निकल गयी और वह रोने लगी।

यह देखकर राजा ने साहूकार के पास छोटी बहू को तुरंत भेजने का संदेश भेजा। साहूकार डर गया कि राजा क्या कहेगा? वह खुद अपनी छोटी बहू के साथ नजर आए. राजा ने छोटी बहू से पूछा– तुमने क्या जादू किया है, मैं तुम्हें दंड दूंगा। छोटी बहू बोली– राजन! धृष्टता क्षमा करें, यह हार ऐसा है कि मेरे गले में हीरे–मोतियों का और दूसरे के गले में साँप बन जाता है। यह सुनकर राजा ने साँप बनकर उसे हार दिया और कहा– अब इसे पहनकर दिखाओ। जैसे ही छोटी बहू ने उसे पहना तो वह हार हीरे–जवाहरातों का हो गया।

यह देखकर राजा को विश्वास हो गया और उसने प्रसन्न होकर उसे बहुत सारी मुद्राएँ पुरस्कार में दीं। छोटी बहू घर लौट आई। उसके धन को देखकर बड़ी बहू ने ईर्ष्या से उसके पति को समझाया कि छोटी बहू के पास कहीं से धन आया है। यह सुनकर उसके पति ने अपनी पत्नी से पूछा बताओ तुम्हें यह धन कौन देता है? तभी उसे सांप की याद आई।

बहन को संकट में फंसा देखकर उसी समय सांप वहां प्रकट हुआ और बोला– जो मेरी बहन के आचरण पर संदेह करेगा, उसे मैं खा जाऊंगा। यह सुनकर छोटी बहू का पति प्रसन्न हुआ और उसने सर्प देवता का आदर–सत्कार किया। ऐसा माना जाता है कि उसी दिन से नागपंचमी का त्योहार मनाया जाने लगा और महिलाएं सांप को अपना भाई मानकर उसकी पूजा करती हैं।

pdfinbox.com